भारत में कृषि

- किसी देश के आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान होता है | आजादी के समय का ढ़ग परंपरागत था और कृषि का वाणिज्यिकरण नहीं हुआ था |
- 1950-51 में राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 55.40% था,जो 2009-10 में घटकर 15% हो गया है |
- 2010-11 में GDP में कृषि का योगदान 14.5% है |
- 2011-12 में अनुमानित योगदान-13.9% |
    - भारत में कुछ प्रणालियाँ व्याप्त थी-
- **जमींदारी प्रथा -** यह प्रथम 1793 में लार्ड-कार्नेवालिस द्वारा बंगाल में आरंभ की गई | इसके अंतर्गत जमीन का स्वामित्व जमींदार के पास रहता है लेकिन खेती की व्यवस्था तथा श्रम करना भूमि का काम करने वाले काश्तकारों के हाथ में था | काश्तकारों का संबंध राज्य सरकार से सीधा नहीं होता था बल्कि जमींदार ही राज्य व काश्तकारों के बीच बिचौलियें का काम करता था | साथ ही राज्य को लगन भी व्ही देता था
- **महालवारी प्रणाली-** इस प्रणाली के अंतर्गत भूमि पर किसी ग्राम समुदाय का स्वामित्व होता है | खेती योग्य भूमि को खेती करने वाले व्यक्तियों में बाँट दिया जाता है और लगाना भी इन्हीं से वसूल किया जाता है इस प्रणाली को विलियम बेन्टिक ने आगरा और अवध में शुरू किया | बाद में यह प्रणाली मध्यप्रदेश और पंजाब में फैल गई |
- **रैयतवारी प्रणाली-** इस प्रणाली के अंतर्गत भूमि का स्वामित्व राज्य के पास लेकिन व्यवस्था में खेती करने वालों का स्वामित्व होता है जिसे रैयत करते है रैयत ही मालगुजारी देने के लिए राज्य के प्रति जिम्मेदार होता है शुरू में यह प्रणाली मद्रास में और बाद में महराष्ट्र,बरार,असम और पूर्वी पंजाब में लागू की गई |
- भारत में सुधार कार्यक्रम स्वतंत्रता के तुरत बाद शुरू किया गया | किसानों के प्रति सामाजिक न्याय और कृषि उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि करना ,इसके मुख्य दो उद्देश्य थे |
- भूमि सुधार कार्यक्रमों को लागू करते समय दो बातों पर विशेष ध्यान दिया गया | - (i) भूमि व्यवस्था के अंतर्गत होने वाले सभी प्रकार के सामाजिकअन्याय और शोषण को समाप्त करना,काश्तकारों की स्थिति मजबूत बनाना तथा ग्रामीण जनसंख्या को समान अधिकार व समान अवसर प्रदान करना,(ii) एक ऐसी नई भूमि व्यवस्था को जन्म देना जिसमें भूमि पर कृषि करने वाला काश्तकार ही उसका वास्तविक स्वामी हों |
- भारत में भूमि सुधार के अंतर्गत निम्नलिखित उपायों को शामिल किया गया |
- मध्यस्थों का उन्मूलन या जमींदारी उन्मूलन - जमींदारी उन्मूलन की शुरुआत उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन एवं भूमि सुधार अधिनियम 1950 के पारित होने से हुई तथा 1952 तक सभी राज्यों में इससे संबंधित विधेयक पारित हो गया |
- कृषि का पुनर्गठन-इस के अंतर्गत निम्न उपाय किए गए -

    (a)जोतों की सीमा बंदी - जुलाई,1972 में विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों द्वारा एक बैठक में नीति बनाई गई कि परिवार को एक इकाई मानते हुए जोतों की उच्चतम सीमा को निर्धारित किया गया |
- आश्वस्त जल पूर्ति क्षेत्र में - 10 से 15 एकड़ |
- निजी स्त्रोतों से सिंचाई वाले क्षेत्र में - 1.25 को 1 एकड़ के समान मापना |
- अन्य भूमि के संबंध में - 54 एकड़ भूमि |
- जो भूमि के संबंध में भारत का विश्व में यू.एस.ए. के बाद दूसरा स्थान है |

(b) **जोतों की चकबंदी -** सर्वप्रथम 1920 में बड़ौदा में चकबंदी अधिनियम पास किया गया था | पहली योजना प्रारंभ होने से पहले उत्तर प्रदेश,पंजाब,हैदराबाद में चकबंदी कानून बनाए गए थे |

- चकबंदी वह तरीका है जिसके द्वारा किसी स्थान किसान के दूर-दूर तक फैले हुए खेतों को एक साथ व्यवस्थित किया जाता है |

(c) **सहकारी कृषि-** इसकेअंतर्गत वे छोटे किसान व सीमांत किसान है जिनके पास बहुत छोटी कृषि जोतें है अपनी भूमि मिलाकर मिलजुल कर खेती करते है |

- **काश्तकारी सुधार-इसकेअंतर्गतमुख्यतःतीन कदम उठाए गए |**
- लगान का नियमन |
- काश्त अधिकारों की सुरक्षा
- काश्तकारों की भूमि पर मालिकाना अधिकार |

भारत में फसलें मुख्य रूप से तीन प्रकार से विभक्त है -

- खरीफ- जुलाई में बुआई तथा सितम्बर या अक्टूबर में कटाई | मुख्य फसलें- चावल,बाजरा,कपास,तिल,गन्ना,सोयबीन,मूंगफली आदि |

- रबी- अक्टूबर में बुआई तथा अप्रैल में कटाई | मुख्य फसलें- गेहूं,जौ,चना,मटर,सरसों आदि |
- जायद - केवल मार्च से जून में कुछ ही स्थानों पर | मुख्य फसलें - खरबूज,तरबूज,ककड़ी एवं सब्जियाँ आदि |

फसलों को दो भागों में बाँटा गया है -

- (i)**खाद्य फसलें-**स्थानीय उपभोग हेतु जैसे गेहूं,चना ,चावल आदि |
- (ii)**व्यापारिक फसलें या अखाद्य**-व्यापार हेतु कच्चे रूप में या अर्ध-विधायिक रूप में जैसे- सरसों,तिल,सूरजमुखी,जुट,चाय,कहवा आदि |

ये दो प्रकार की होती है -

(i)**बागन फसलें**- पौधों तथा वृक्षों के रूप में जैसे- कॉफ़ी,चाय,रबड़ आदि|

(ii)**खेत की फसलें**- खेतों में उगाई जाने वाली जैसे- कपास,जुट,गन्ना,तिलहन आदि |

- बहुफसल प्रणाली - भूमि के एक टुकड़े पर जहाँ एक फसल उगायी जाती थी,वहाँ सम्भावित अनेक फसलों को सम्मिलित करके उगाने के द्वारा कृषि उत्पादन में वृद्धि लायी जा सकती है | भूमि के सीमित आकर की कमी को बहुफसल प्रणाली के द्वारा पूरा किया जा सकता,जिसके लिए किसानों को शिक्षित तथा जागरूक करना आवश्यक है | भारत में इसका प्रयोग अधिकांशतः किया जा रहा है |
- भूमि सुधारों के अंतर्गत उठाए कदमों के मूलयांकन के लिए तत्कालीन योजना आयोग के सदस्य प्रो.बी.एस मिन्हास की अध्यक्षता में गठित समिति की रिपोर्ट के अनुसार भारत में भू-सुधार कार्यक्रमों को विशेष सफलता नहीं मिली |
- भारत में विभिन्न भूमि-सुधारों के अंतर्गत कार्यक्रमों की विफलता के अनेक कारण थे- जैसे-(1)कानूनों में कमियाँ (2)राजनैतिक निष्ठा का अभाव तथा(3)प्रशासनिकतंत्र की उदासीनता |
- 1960-70 के दशक में देश में अनाज की पैदावार बढ़ाने के लिए कुछ नए उपाय अपनाए गए | इसे'हरित क्रांति' के नाम से जाना जाता है 1966-67 में देश में कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि होने के कारण इस 'हरित क्रांति' का नाम दिया गया |
- अमेरिकन वैज्ञानिक 'नोर्मेन बोर्लोग' को 'हरित क्रांति का पिता/जनक' कहा जाता है | उनको नोबेल पुरस्कार भी दिया था | इसकी मृत्यु 12 सितम्बर,2009 में हुई | भारत के सन्दर्भ में हरित क्रांति के पिता का श्रेय डॉ.एम.एस. स्वामीनाथन को दिया जाता है |
- हरित क्रांति नाम अमेरिकी विलियम गैड ने दिया था |
- हरित क्रांति के अनुसार- (1)'HYV' उन्नत किस्म के बीजों,(2)उन्नत किस्म के रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग,(3)कृषि की नई-नई तकनीकों का प्रयोग कर के 'Food Grain' का उत्पादन बहुत बढ़ा |
- सीमाएं- प्रथम स्तर पर हरित क्रांति में कुछ सीमाएं थी-
- हरित क्रांति की शुरुआत खरीफ या चावल और गेहूं की फसल से हुई थी लेकिन इसका सबसे ज्यादा लाभ गेहूं को मिला | अन्य फसलों पर इसका प्रभाव नहीं हुआ |
- हरित क्रांति में सर्वाधिक लाभ पंजाब,हरियाण और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों को प्राप्त हुआ | इसके आलावा अन्य राज्यों को इसका ज्यादा प्रभाव नहीं हुआ
- रासायनिक उर्वरकों का अधिक प्रयोग होने से मिट्टी को उत्पादकता कम हो गई |
- जल प्रदूषण संबंधी आर्थिक समस्याएँ भी सामने आई |

द्वितीय हरित क्रांति या सतत हरित क्रांति-कृषि क्षेत्र में एक नई हरित क्रांति की आवश्यकता है | इसलिए सतत हरित क्रांति का विचार भूतपूर्व-राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.कलाम ने 2006 में 93वें में विज्ञान काग्रेस में दिया था | उनके अनुसार 'खाद्य सुरक्षा' लेन के लिए एक और 'हरित क्रांति' की आवश्यकता है इसके लिए-

- (i)जेनेटिकली मॉडिफाइड बीज
- (ii)जैविक कृषि को बढ़ावा |
- (iii)वर्षाजल संरक्षण जैसी तकनीक का प्रयोग |
- (iv)मिट्टी को स्वस्थ तथा उर्वरक मुक्त बनाने पर बल दिया गया |

- प्रथम हरित क्रांति से खाद्य फसलों का उत्पादन 210 मिलियन टन से बढ़ा कर 420 मिलियन टन करन अनिवार्य जरुरी है अथवा होने का अनुमान है | जिससे भारत में खाद्य-सुरक्षा आएगी |
- द्वितीय हरित क्रांति में अधिक से अधिक फसलों को समाहित किया गया जैसे- दालें,तिहलन,मोटे अनाज,सब्जियाँ आदि |
- हरित क्रांति के अतिरिक्त पुशपालन (Animal Husbandry),Horticulture,opeation Food आदि के क्षेत्र में भी लाभप्रद होगी |
- खेती की यह प्रणाली जी पूर्णतया वर्षो के पानी पर निर्भर करती है बारानी खेती कहलाती है |

- ड्रिप सिंचाई प्रणाली अर्थात् छिड़काव द्वारा सिंचाई में पानी का कोई अंश व्यर्थ नहीं होता है |
- **ICAR** (IndainCouncil of Agriculture and Resources) कृषि के विकास के लिए कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में अनुसंधान एवं शिक्षण कार्यो के लिए भारत सरकार का शीर्ष निकाय है | भारत सरकार का कृषि मंत्री इसका अध्यक्ष होता है | इसके अतिरिक्त इसमें एक महानिदेशक और कुछ कृषिवैज्ञानिकभी होते है जो कृषिके विकास की योजना करते है | इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है |
- **MOSSANTO** - यह एक ऐसी कृषि शोध को एक निजी वुस्त के रूप में सृजित करती है तथा पेटेन्ट देकर के अंतर्गत सुरक्षित रखती है |
- भारत में मुख्यतः उत्पादित फसले व उनके सर्वाधिक उत्पादित राज्य निम्न सारणी में है-

  गेहूं(Wheat) - उत्तरप्रदेश,पंजाब,हरियाण |
  चावल(Rice)-पश्चिम बंगाल,उत्तर प्रदेश,पंजाब |
  मोटे अनाज(Coarse Cereals)-महाराष्ट्र,कर्नाटक,राजस्थान |
  तिहलन(Oil Seeds)-गुजरात,मध्यप्रदेश,राजस्थान|
  कहवा(Coffee)-कर्नाटक,केरल,तमिलनाडू|
  गन्ना(Sugarcane)-उत्तर प्रदेश,महाराष्ट्र,तमिलनाडू|
  रेशम(Silk)-कर्नाटक,आंध्रप्रदेश,पश्चिम बंगाल|
  कपास(Cotton)-गुजरात,महाराष्ट्र,आंध्रप्रदेश|
  जुट(jute)-पश्चिम बंगाल,बिहार,असम|
  दालें(Pulses)-मध्यप्रदेश,उत्तर प्रदेश,राजस्थान |
  सोयाबीन(soyabean)-मध्यप्रदेश,महाराष्ट्र,राजस्थान|

विभिन्न खाद्यन्नों या फसलों के उत्पादन में -	विश्व (में स्थान)	भारत (का स्थान)
1.चीनी/गन्ना कासर्वाधिक उत्पादन सर्वाधिक खपत या उपभोग	ब्राजील भारत	दूसरा पहला
2.काली चाय के उत्पादन में उपभोग में	भारत भारत	पहला पहला
3.गेहूं उत्पादन में	चीन	दूसरा
4.चावल उत्पादन में	चीन	दूसरा
5.जुट उत्पादन में	बाग्लादेश	दूसरा
6.कपास उत्पादन में	चीन	तीसरा

HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!

7.रबड़ उत्पादन में (भारत में केरल)	थाईलैंड	
8.नारियल उत्पादन में उपभोग में प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में	भारत भारत मैक्सिको	पहला पहला
9.दूध उत्पादन में	भारत (1998 से)	पहला
10.तम्बाकू उत्पादन व उपभोग	चीन	तीसरा
11.सब्जियों के उत्पादन में फलों के उत्पादन में	भारत भारत	पहला दूसरा

- कपास की एक गाँठ में 170 kg कपास होती है |
- 1 मई,2004 से भारत में सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान करने तथा तम्बाकू उत्पादों के विज्ञापन पर प्रतिबंध लगा हुआ है |
- भारत में उत्पादित तिहलनों में प्रथम 9 तिहलन है - (i)मूंगफली (ii)सोयाबीन (iii)सरसों (iv)तोरिया (v)सूरजमुखी(vi)तिल(vii)अरंडी(vii)नाइजर(ix)अलसी

भारत में कृषि क्षेत्र की कुछ क्रांतियाँ:-

हरित क्रांति	खाद्यन्न उत्पादन (गेहूं,मक्का,धान)
श्वेत क्रांति	दुग्ध उत्पादन
भूरी क्रांति	पेय पदार्थ/ऊन उत्पादन
नीली क्रांति	मत्स्य उत्पादन
काली क्रांति	वैकल्पिक ऊर्जा(पैट्रोलियम/कच्चे तेल का उत्पादन)
गुलाबी क्रांति	झींगा उत्पादन
रजत क्रांति	अंडा एवं मुर्गी उत्पादन
रजत रेशा क्रांति	कपास उत्पादन
लाल क्रांति	माँस एवं टमाटर उत्पादन
दौर क्रांति	आलू उत्पादन
सुनहरी क्रांति	बागवानी(सेव उत्पादन)
सुनहरी रेशा क्रांति	जुट उत्पादन
पीली क्रांति	सरसों उत्पादन
ग्रे क्रांति	उर्वरक उत्पादन
इन्द्रधनुषी क्रांति	सम्पूर्ण कृषि विकास

- CACP(Commision of Agericulture Cost& Price): प्रो.एम.एल.दातेवाला की अध्यक्षता में हुई थी | 1985 में इसे CACP नाम दिया जाता गया | मूल्य संबंध में CACP निम्न बातो को ध्यान में रखता है -
- आगत की लागत में परिवर्तन |
- अंतर फसल मूल्य समता |
- मूल्य स्थिति |
- वैश्विक उपलब्धता |
- कृषि तथा गैर कृषि क्षेत्र के बीच व्यापार की शर्ते |
- 24 फसलों के लिए वर्ष में 2 बार रबी व खरीफ के लिए मुल्य तय करता है |

कृषि कीमत नीति

- **न्यूनतम समर्थन मूल्य-**CACP की घोषणा पर जिस मूल्य पर सरकार साडी फसल को किसानों से खरीदने को तैयार होती है | या किसान अपनी फसल बेचने के लिए तैयार हो उसे न्यूनतम समर्थन मूल्य कहते है |
- वर्तमान में यह 24 फसलों के लिए तय किया जाता है |
- सरकार वर्ष में दो बार- रबी औए खरीफ के मौसम में यह निर्धारण करती है |
- इससे उत्पादन को बढ़ाने के लिए किसानों को प्रेरणा मिलती है |
- **खरीद मूल्य-**वह मूल्य जिस पर सरकार सामान्यत: अपने स्टॉक और सार्वजनिक वितरण प्रणाली से संबंधित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किसान से उसकी फसल को वास्तव में खरीदती है उसे खरीद या वसूली मूल्य कहते है |
- यह मूल्य सामान्यत:MSP के बराबर होता है या उससे अधिक होता है परन्तु उससे कम नहीं होता है |
- **आर्थिक लागत**- भारतीय खाद्य निगम की आर्थिक लागत के तीन घटक है-
- किसानों को देय न्यूनतम समर्थन मूल्य तथा बोनस(MSP&PC)
- खरीद संबंधी सहायक खर्च जैसे यातायात और भंडारण आदि
- वितरण लागत
- आर्थिक लागत में प्रशासनिक व्यय नहीं जोड़ते |
- **निर्गम या निकासी लागत**- जिस मूल्य पर सरकार द्वारा केन्द्रीय भंडारों से सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत उचित मूल्य की दुकानों या आटा मिलों के लिए आज निकला जाता है उसे निर्गम मूल्य कहते है |
- **प्रशासित मूल्य**- जब किसी वस्तु की कीमत बाजार कारकों द्वारा निर्धारित न होकर प्रशासनिक हस्तक्षेप द्वारा निर्धारित हो,तो उसे प्रशासित कीमत कहा जाता है |
- **दोहरी मूल्य निर्धारण पद्धति** - इस पद्धति के अंतर्गत सरकार कृषि लागत पर आधारित न्यूनतम समर्थित मूल्य के अतिरिक्त किसानों भी को परिवर्तनीय दर देगी जी खुले बाजार मूल्य के परिवर्तनों के साथ जुड़ा होगा |
- यह मूल्य स्थित नही होगा बल्कि बाजार की दशाओं के अनुसार कारकों के आधार पर आर्धारित होता है तो यह बाजार मूल्य कहलाता है |
- **खाद्यान्न सब्सिडी**- आर्थिक लागत का निकासी मूल्य पर आधि क्य सब्सिडी कहलाता है | **सब्सिडी=आर्थिक लागत-निकासी मूल्य |**
- **भारतीय खाद्य निगम-** भारतसरकार द्वारा भारतीय खाद्य निर्गम की स्थापना विश्व बैंक की सलाह पर सन् 1965 में की गई जो देश में खाद्यान्नों के भंडारण,अधिप्राप्ति और वितरण से जुड़ा है | यह देश के सभी जिलों में अपने गोदामों की व्यवस्था करता है |
- FCI अधिकांशतया काम PDS के माध्यम से करता है |
- देश के खाद्यान्न 'बफर स्टॉक' इसी के द्वारा भंडारित किए जाते है |
- CACP को घोषणा पर सरकार FCI के माध्यम से MSP पर किसानों से फसल खरीदता है |
- **खाद्य सुरक्षा-**विश्व विकास रिपोर्ट ने खाद्य सुरक्षा की परिभाषा सभी व्यक्तियों के लिए-"सभी

समय पर एक सक्रिय,स्वरूप जीवन जीने के लिए पर्याप्त भोजन की उपलब्धि" के रूप में दी | इसी के कारण हरित क्रांति का उदय हुआ |

- **भारत में खाद्य सुरक्षा** -भारत में सरकार द्वारा स्वस्थ व सक्रिय जीवन हेतु तैयार की गई खाद्य सुरक्षा के कारण देश में अनाज की उपलब्धता और अधिक सुनिश्चित की गई | इस व्यवस्था के दो घटक है |

1.बफर स्टॉक

2.सार्वजनिक वितरण

- **बफर स्टॉक**-कुछ आकस्मिक परिस्थितियों जैसे-सूखा,अकाल,फसल खराब होने की स्थिति आदि में संरक्षित करने तथा मूल्य की अचानक तथा तेज वृद्धि से सामान्य लोगों को संरक्षित करने के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत रखे जाने वाले अनाज के स्टॉक के अतिरिक्त एक स्टॉक सरकार रखती है,जिसे बफर स्टॉक कहते है |
- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली** -सार्वजनिक वितरण प्रणाली में खाद्यान्नों को उपलब्ध करने का काम भारतीय खाद्य निगम द्वारा किया जाता है | PDS जिसे सर्वप्रथम 1950 मे शुरु किया गया,गरीबों को सस्ते मूल्यों पर खाद्यान्नों को वितरित करने की प्रणाली है | जिससे उन्हें खाद्यान्नों की बढ़ती कीमतों के बोझ से बचाया जा सकें |
- इसके अंतर्गत केन्द्र सरकार 5 वस्तुओं - गेहूं,चावल,चीनी,आयातित खाद्य तेल तथा मिट्टी के तेल को खरीदने तथा राज्यों तथा संघराज्यों को उनकी आपूर्ति करने का दायित्व वहन करती है |
- कुछ राज्य PDS के द्वारा वितरण के लिए कुछ अन्य वस्तुओं को प्रदान करते है |
- इस समय PDS एक त्रिस्तरीय प्रणाली है जिसके अंतर्गत लाभ प्राप्त करने वाले उपभोक्ताओं को तीन वर्गों में रखा जा सकता है |
- **अन्त्योदय अन्न योजना** - 1 अप्रैल,2002 से शुरू इस योजना के अंतर्गत गरीबी रेखा से भी अधिक नीचे वर्ग के लोगों को 25Kg के स्थान पे 35kg खाद्यान्न प्रति परिवार,गेहूं रुपए 2 किलोग्राम तथा चावल रुपए 3 प्रति किलोग्राम दिया जाएगा | इनके लिए PDS में अन्त्योदय कार्ड दिए गए है |
- **गरीबी रेखा से नीचे परिवार** - 1 अप्रैल,2002 से शुरू योजना के तहत BPL परिवारों को 10kg के स्थान पर 25 kg अनाज मुख्यतःगेहूं रुपए 4.15kg तथा चावल रुपए 5.65kg दिया जाता है |
- **गरीबी रेखा से थोड़े ऊपर परिवार-** जिनके लिए मूल्य आर्थिक लागत के बराबर होगा और आपूर्ति तभी होगी जब खाद्यान्न उपलब्ध है |
- **खाद्य सुरक्षा के अंतर्गत ही मध्याह्न भोजन** - योजना 1982 से तमिलनाडू में शुरू हुई थी | इसके अंतर्गत विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक विद्यार्थियों को मुफ्त भोजन जिसमे 12g प्रोटीन तथा 420g कैलोरी तथा 6 से कक्षा 8 तक के विद्यार्थियों को भोजन में 20g प्रोटीन तथा 420 कैलोरी की मात्रा दी जाती है |
- **एकीकृत बाल विकास सेवाएं** -ICDS का कार्यक्रम भारत में मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा 1975 में केन्द्रीय कार्यक्रम के रूप में शुरू किया गया | इस कार्यक्रम का आयोजन तथा परिचालन लागतों का खर्च केन्द्र द्वारा तथा इसका कार्यन्वयन राज्य सरकारे करती है |
- यह विश्व की सबसे बड़ी बाल सेवा कार्यक्रमों में एक है और इसमें 6 वर्ष से कम आयु वाले बच्चों के लिए तथा गर्भवती तथा स्तनपान करने वाली माताओं के लिए 6 मूल सेवाएं प्रदान करने की व्यवस्था है |
- ICDS का कार्यान्वयन 'आँगनवाड़ी' केन्द्र के माध्यम से किया जा रहा है | काम करने वाले कर्मचारियों में मुख्य परियोजना विकास

पदाधिकारी पर्यवेक्षक,आँगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा सहायक शामिल है |

- वर्ष 2009-10 में भारत सरकार ने पूर्वोत्तर क्षेत्रों के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकार की भागीदारी 90:10 के अनुपात में निश्चित की गई है |
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन :** भारत में आम आदमी को कम मूल्य पर खाद्यान्न उपलब्ध कराना खाद्यान्न सुरक्षा का एक प्रमुख मापदंड है | राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन की घोषणा की जिसका प्रमुख उद्देश्य कृषि तथा संबंध क्षेत्र की 2% वार्षिक विकास की दर को बढ़ाकर 2012 तक 4% वार्षिक करना है |
    - NFSM के प्रमुख 3 अंग व उनमें सम्मिलित राज्य निम्नलिखित है-
- **चावल मिशन** - कुल राज्य 14 व 136 जिले 136(आंध्रप्रदेश,असम,बिहार,छत्तीसगढ़,गुजरात,झारखंड,कर्नाटक,करेल,मध्यप्रदेश,महाराष्ट्र,तमिलनाडू, ओंड़ीशा,उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम बंगाल)
- **गेहूं मिशन** -कुल राज्य 10 व जिले 138 (पंजाब,हरियाण,उत्तर प्रदेश,बिहार,झारखंड,राजस्थान,मध्यप्रदेश,गुजरात,महाराष्ट्र,तथा पश्चिम बंगाल)
- दाल मिशन - कुल राज्य 14 व जिले 171 (आंध्रप्रदेश,छत्तीसगढ़,गुजरात,बिहार,कर्नाटक,मध्य प्रदेश,महाराष्ट्र,राजस्थान,तमिलनाडू,पंजाब,हरियाण, उत्तर प्रदेश,ओंड़ीशा एवं पश्चिम बंगाल)
- कृषि ऋण सहकारी समितियाँ - देश क किसान अपनी वित्त आवश्यकताओं की पूर्ति दो प्रकार के स्त्रोतों से ऋण प्राप्त करता है |
- गैर संस्थागत स्त्रोत - साहूकार
- संस्थागत स्त्रोत -बैंक,नाबार्ड,क्षेत्रीय ग्रामीण क्षेत्र, सहकारी बैंक आदि |
- **गैर संस्थागत स्त्रोत-**1999 से पहले किसान को बीज,खाद आदि के लिए धन की आवश्यकता होने पर साहूकार से ऊँची ब्याज दर पर धन उधर लेना पड़ता था | इसमें किसान को ब्याज तो अधिक देना ही होता है और उसका शोषण भी होता था |
- संस्थागत स्त्रोत - संस्थागत स्त्रोत के अंतर्गत कृषि बैंक - नाबार्ड,क्षेत्रीय ग्रामीण क्षेत्र, सहकारी बैंक आदि किसान को उचित अथवा कम ब्याज दर पर निम्न तीन अवधियों के लिए ऋण प्रदान करते है |
- **अल्पकालिक ऋण** -यह ऋण 15 महीने तक के लिए देय होता है |
- **माध्यम कालिक ऋण** -यह ऋण 15 महीने से 5 साल तक के लिए देय होता है |
- **दीर्घकालिक ऋण** -यह ऋण 5 साल से अधिक समय के लिए देता है |
- भारत में सहकारी साख संगठन की शुरुआत सर्वप्रथम 1904 में हुआ | प्राथमिक सहकारी समिति अल्पकालीन ऋण तथा राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक दीर्घकालीन ऋण उपलब्ध करती है |
- सहकारी समितियाँ ग्रामीण ऋण का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत है इसमे ऋण पर ब्याज की दर सबसे कम है तथा किसान को शोषण का भय भी नहीं है |
- मार्च 1969 तक सहकारी खेती से संबंधित कार्यक्रम केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित होता था | इसके पश्चात यह राजू सरकारों द्वारा लागू होने लगा |
- कृषि को उद्योग का दर्जा देने वाला प्रथम राज्य महाराष्ट्र(1997) है
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की 1975 में स्थापना की गई| प्रारम्भ में ऐसे मात्र 5 बैंक स्थापित किए गए थे जिनकी संख्या बाद में बढ़ गई | पहला क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक 2 अकटूबर,1975 को 'प्रथमा बैंक' के नाम से उत्तर प्रदेश में खोला गया था |
- वर्तमान में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की संख्या 82 है |

- **नाबार्ड-'राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकासबैंक'**-कृषि क्षेत्र में सरकार की ग्रामीण साख व्यवस्था में सबसे बड़ी संस्था है |
- इसकी स्थापना शिवरमन कमेटी की संस्तुति में 12जुलाई,1982 को कृषि तथा ग्रामीण विकास के लिए की गई थी | इसका मुख्यालय बम्बई में है
- 1963 में स्थापित 'कृषि पुनर्वित निगम' को पुनर्गठित करके 1982 में नाबार्ड की स्थापना की गई |
- नाबार्ड के गठन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के कृषि ऋण विभाग ग्रामीण क्षेत्र एवं योजना प्रकोष्ट और कृषि पुनर्वित तथा विकास निगम का विलयन किया गया |
- नाबार्ड की स्थापना का मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि,लघु व कुटीर उद्योग,दस्तकारियों और अन्य आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने हेतु ऋण उपलब्ध कराना है ताकि समेकित ग्रामीण विकास करके ग्रामीण क्षेत्रों को खुशहाल बनाया जा सकें |
- नाबार्ड की अधिकृत अंश पूँजी रुपए 500 करोड़ है जिसमें भारत सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक का हिस्सा 50:50 है किन्तु 1 फरवरी,2001 में नाबार्ड अधिनियम 1981 में संशोधन कर इसकी अधिकृत पूँजी को बढ़ाकर 5000 करोड़ कर दिया गया |
- नाबार्ड के तीन मुख्य कार्य है -
- पुनर्वित
- संस्थात्मक विकास
- अन्य बैंकों के कार्यो का निरीक्षण |

किसान क्रेडिट कार्ड योजना :

- 1998-99 किसानों को अल्पावधिक ऋण सुविधाजनक बनाने के लिए किसान क्रेडिट अक्रद योजना शुरू की गई |
- 2002-03 में KCC योजना के अंतर्गत KCC धारक किसानों के लिए बीमा योजना के अनुसार दुर्घटना से मृत्यु पर रुपए 50000 तथा स्थायी विकलांग पर रुपया 25000 की बीमा सुरक्षा की व्यवस्था की है |
- 2004 में संशोधन में NABARD ने इस योजना के द्वारा कृषि एवं सम्बन्ध क्रिया कलापों के लिए दीर्घकालीन अवधि ऋणों की व्यवस्था की है |
- 2004 में किसान KCC को ATM से जोड़ा गया है |
- अभी तक बाटें गए KCC में सर्वाधिक अंश(44.4%) व्यापारिक बैंकों का रहा है |

राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना

- 1985 में शुरू की गई | कृषि क्षेत्र में क्षतिपूर्ति या क्षति की आंशका जैसे-सूखे,बाढ़,ओंलावृष्टि,चक्रवात,आग जैसी प्राकृतिक आपदाओं तथा कीट तथा बिमारियों के कारण फसल को हुई क्षति से किसानों का संरक्षण करने के लिए राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना आरंम की गई |
- इस योजना को प्रतिस्थापित करके 22जून,1999 को सफल बीमा की नवीनतम 'राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना' शुरू की गई और इसे 1999 की रबी फसल से लागू किया गया |
- प्रारंभ में यह केवल ऋणधारक किसानों के लिए कुछ जिलों तक,कुछ फसलों पर समिति थी परन्तु 1999-2000 के बाद यह सभी किसानों के लिए सभी फसलों पर सबी जिलों में लागू की गई है |

वर्षा बीमा या मौसम आधारित फसल बीमा योजना :

- 2004-05 में राष्ट्रीय कृषि सीमा योजना ने मुख्यतः खरीफ की फसल के लिए वर्षा की अनियमितता के आधार पर 16 राज्यों के 150 जिलों में शुरू की है |
    - 2004 में 'भारतीय कृषि बीमा कम्पनी लि. :

- **नेफेड :** कृषि उपजों के विपणन हेतु सहकारी क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष संस्था के रूप में राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ की स्थापना की गई |
- इसकी स्थापना 2 अक्टूबर,1958 को हुई |
- **टाइफेड :** जनजातीय लोगों को शोषण करने वाले निजी व्यापारियों से छुटकारा दिलाने तथा उनके द्वारा तैयार की गई |वस्तुओं का उचित मूल्य दिलाने के उद्देश्य से 1987 में भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन परिसंघ की स्थापना की गई |
- **राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम** : 1963 में स्थापित इसका मुख्य उद्देश्य सहकारी समितियाँ के माध्यम से कृषि वस्तुओं तथा अन्य कुछ चयनित वस्तुओं संबंधी कार्यक्रमों के उत्पादन,विधायन,भण्डारण तथा विपणन कार्यक्रमों को आयोजित तथा प्रवर्तित करना है |
- **राष्ट्रीय बागवानी मिशन :** यहमिशनमई 2005 में बागवानी के अंतर्गत आने वाले फल,सब्जियाँ,मसले,पुष्प,बागान तथा नारियल आदि को प्रोत्सहित करने के लिए द्वारा कृषकों के आय में वृद्धिलाने के उद्देश्यसे एकप्रमुख प्रयास है |
- अच्छी गुणवत्ता एवं उत्पादन वाले पौधों की आपूर्ति के लिए इसके अंतर्गत सरकार एक बैंक बना रही है जिसे ग्राफ्टिंग बैंक कहा जाएगा |
- विश्व के फलों के कुल उत्पादन में भारत का 10% हिस्सा है |
- आम,केला,चीकू और नींबू में भारत प्रथम |
- सब्जियों को पैदावार में चीन के बाद भारत दुसरे स्थान पर |
- फूलगोभी,बंद गोभी,तथा प्याज उत्पादन में दूसरा |
- आलू व टमाटर उत्पादन में तीसरा |
- मसालों का घर-भारत |
- काजू का सर्वाधिक उत्पादन व उपभोग - भारत |
    - **संरक्षित हरित गृह कृषि :**
- हरित गृह से आशय उस संरक्षित निर्मित दायरे या घर से है जिसके भीतर तापमान,आर्द्रता,नमी का स्तर इस प्रकार कायम रखा जाता है जिससे वांछनीय सब्जी,फल,फुल आदि मौसम या गैर मौसमानुसार उगाए जा सकें |
- भारत में श्वेत क्रांति : दुग्ध उत्पादन में शीघ्रता से वृद्धि की प्रक्रिया को श्वेत क्रांति कहा जाता है |
- विश्व में दुग्ध उत्पादन में भारत प्रथम स्थान पर तथा USA द्वितीय स्थान पर है |
- **1977 में हैदराबाद में राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान**-की स्थापना की गई ग्रामीण विकास के लिए प्रशिक्षण,शोध तथा सलाहकारी संस्था के रूप में कार्यरत है |

कृषि उत्पादन मानक :

- **एगमार्क** : कृषि वस्तुओं की गुणवत्ता को प्रभावित करने के लिए 1937 में एग्रीकल्चर प्रोड्यूस ऐक्ट पारित हुआ,जिसके अंतर्गत उन उत्पादों पर,जो उच्च गुणवत्ता के है तथा जिनकी गुणवत्ता सरकार द्वारा प्रमाणित है,एगमार्क की सिल लगा दी जाती है केन्द्रीय एगमार्क प्रयोगशाला नागपुर में है |
- **इकोमार्क :** पर्यावरण और वन मंत्रालय द्वारा 1992 में इकोमार्क की योजना प्रारंभ की गई है | इसके लिए सर्वप्रथम साबुन एवं डिटरजेंट के लिए इकोमार्क निर्धारित किए गए | यह उन उत्पादों पर दिया जायेगा,जो वातानुकूलित उत्पाद होंगे |
- **रुग्मार्क** : अमेरिका स्थित संस्था-चाइल्ड लेबर कोलिशन ने भारत सरकार के इस कदम को 'बालश्रम' के उन्मूलन के संदर्भ में प्रभावहीन बताया है तथा कहा है की केवल रुग्मार्क चिन्ह ही इस बात का उचित प्रमाण है की कालीन के उत्पादन में बालश्रम का उपयोग नहीं हुआ है |
- **हॉलमार्क :**स्वर्णभूषणो की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने हेतु भारतीय ब्यूरो की नयी-हॉलमार्क

योजना 12 अप्रैल,2000 से शुरू की गयी है इसके अंतर्गत BIS एक्ट 1986 के अंतर्गत जारी किया वाला हॉलमार्क उसी सोने से बने आभूषणों के लिए प्रदान किया जाता है जो कि मानक के अनुरूप होगा |

- ISI भारतीय मानक संस्थान : Product Quality (उत्पाद गुणवत्ता)
- बार कोडिंग : उत्पाद के नकल और बिना इजाजत के नकल/कॉपी को रोकने और उत्पाद के विवरण को जानने की विधि |
- Star Rating ऊर्जा के खपत को दर्शाने हेतु तय की गई मापदंड | अधिनियम 5 तारांकित ऊर्जा के न्यूनतम खपत दर्शाता है जबकि एक तारांकित अथवा बिना तारांकित अधिकतम को दर्शाता है |
- कुछ मुख्य मानक :
    - ISO-9000-उत्पादन और प्रबंधकीय गुणवत्ता |
    - ISO-14000-पर्यावरणीय मानक (जैसे-मुथरा में रिफाइनरी)
    - ISO-18000-स्वास्थ्य मानक
    - ISO-22000-खाद्य सुरक्षा

HARYANA JOB ALERT
हर सवाल का जवाब!